

SHRI WAREPPA NABA

Shri Wareppa Naba, an Eminent Actor, Play-Wright and Theatre Director, was born on the Sixteenth Day of October, 1941 at Haobam Marak Thingel, Imphal. Son of Late W. Cheitanya a prominent Nata Sankirtana performing Artiste, he took his Degree in Art Stream and Degree in Education under Guwahati and Utkal University.

2. Since the establishment of Theatre Mirror in 1965, Shri Naba gave his utmost contribution for the promotion of Theatre Culture in the region. He acted, directed and produced number of plays and won several awards which acclamations which could lead him to recognize him as one of the distinguished theatre directors in the country.

3. During the span of 52 years Shri Naba participated in series of Theatre Festivals organized by prestigious agencies held at Imphal, Silcher, Kohima, Guwahati, Bihar, Kolkata, Odhisha, Mumbai, Mysore, Rajasthan, Bhopal, Allahabad and New Delhi etc. including Kathmandu and Sri Lanka. Holding of regular theatre workshops, establishment of a school for theatre having Certificate and Diploma Courses under his directorship and organization of Theatre Festivals in different places in Manipur etc. has also been his busy schedule apart from production of new plays.

4. Shri Naba's love for Shumang Leela Tradition and his active participation since the year 1980 by utilising his whole energies and creative potentialities being an artistic director in the field as well as being the Chairman of the Academic Sub-Committee of the Manipur State Shumang Leela Council, an apex body in the region.

5. Shri Naba took his keen interest and active service for the promotion and protection of all those rare but languishing Narrative and Performing Art Forms in Manipur for the last 20 years. Being the president of the Theatre Centre, Manipur one of the premier apex cultural organisation in the region, he has been organising series of Festival of Narrative Arts in all rare art forms such as Lairik Theeba Haiba, Waree Leeba, Pena Phamshak, Khongjom parva, Khubak Eshei, Nata Sankirtana, Khunung Eshei, Maan Bhanjan, Goura Leela and Khullang Eshie etc. since the last 13 years.

6. Shri Naba was awarded Recipient Fellowship by Manipur State Kala Akademi and DOC India. He won Best Actor Award in the year 1979-1980 and 1986, Best Director Awards, 1981, 1982, 1985, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1995, 1996, 1997, 1999 and 2016, State Kala Akademi Award in the year 1990, Natyashree, 2000, Natyashree honoured by Theatre Movement, Cuttack, Dr. Ambedkar Fellowship Award, 2009, Tamapatra Awarded by Royal Court from His Highness Maharaja of Manipur,2009 Natyabhushan honoured by Manipur Sahitya Parishad, Life Time Achievement Award honour by Theatre Centre, Manipur, 2011 and 2016, Natya Ratna Award , 2013, Kalakshetra Guru Saman Award, 2013, Interantional Life Time Achievement Award, 2013, Indo Nepal Friendship International Award, 2014, India Excellence International Award, 2015, Indo- Shri Lanka Friendship International Award, 2015, Nilamani Ningshig Mana, 2015, Life Time Achievement Award, 2014, Minglen Khonga – 2015 etc. Service for making promotion and protection of all those beautiful traditional culture in Manipur without distortion of their fragrance facing with the changing phenomenon thereby making ultimately in shaping our Indian Culture is the only way of his life.



श्री वारेप्पा नब

श्री वारेप्पा नब एक प्रख्यात चरित्र अभिनायक, नाटककार एवं थिएटर निदेशक हैं। आपका जन्म 16 अक्तूबर, 1941 को हौबाम मारक थिंगेल, इंफाल में हुआ था। आप प्रख्यात नट संकिर्तन प्रस्तोता कलाकार, स्व. डब्ल्यू चेतन्या के पुत्र हैं। आपने गुवाहाटी एवं उत्कल विश्वविद्यालयों से कला संकाय में तथा शिक्षा में डिग्री की उपाधियां प्राप्त की।

2. वर्ष 1965 में थिएटर मिरर की स्थापना के समय से आपने इस क्षेत्र में थिएटर संस्कृति के संवर्धन हेतु अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान दिया है। आपने अनेक नाटकों में अभिनय किया, निर्देशन किया और उनको प्रोड्युस किया तथा आपको अनेकानेक पुरस्कारों एवं अभिनंदनों से सम्मानित किया गया, जिसके फलस्वरूप आप देश में लब्ध प्रतिष्ठित थिएटर निदेशक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

3. 52 वर्षों की अवधि के दौरान, आपने काठमांडु और श्रीलंका सहित इंफाल, सिलचर, कोहिमा, गुवाहाटी, बिहार, कोलकाता, उड़ीसा, मुबंई, मैसूर, राजस्थान, भोपाल, इलाहाबाद एवं नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध एजेंसियों द्वारा आयोजित थिएटर में भाग लिया। नए नाटकों के प्रोडक्शन के अलावा, अन्य नियमित रूप से थिएटर कार्यशालाओं के आयोजन, एक थिएटर स्कूल की स्थापना, जिसमें उनके निर्देशन में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है और मणिपुर में विभिन्न स्थानों पर थिएटर फेस्टिवलों के आयोजन जैसे कार्यों में आप व्यस्त रहते हैं।

4. शुमंग लीला ट्रेडिशन के प्रति आपका प्रेम एवं इस क्षेत्र में एक कलाकार निदेशक के रूप में तथा मणिपुर राज्य शुमंग लीला परिषद, के अकादमिक उप-समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी संपूर्ण उर्जा एवं सर्जनात्मक क्षमताओं का उपयोग करते हुए वर्ष 1980 से ही आप इसमें सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं।

5. आपने मणिपुर के सभी विलुप्त प्राय किंतु प्रेमविह्वलित करने वाली कथा एवं प्रस्तुति कला विधाओं के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु विगत 20 वर्षों से गहरी रूचि दिखाई है और अपनी सक्रिय सेवा अर्पित की है। मणिपुर के शीर्षस्थ सांस्कृतिक संगठनों में सुमार, थिएटर केन्द्र, मणिपुर के अध्यक्ष के रूप में आपने विगत 13 वर्षों में उन सभी विलुप्त प्राय: कला विधाओं जैसे – लैटिक थीबा, वारी लीबा, पेना फमाशक, खोंगजोम पर्वा, खुबक एशी, नट संकीर्तन, खुनुंग एशी, मान भंजंन, गौर लीला और खुलंग एशी आदि में कथानक कलाओं के महोत्सवों की श्रृंखला आयोजित की है।

6. आपको मणिपुर राज्य कला अकादमी और डी ओ सी इंडिया द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हे। आपको वर्ष 1979-1980 और 1986 में बेस्ट एक्टर का पुरस्कार, 1981, 1982, 1985, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1995, 1996, 1997, 1999 और 2016 में बेस्ट डायरेक्टर के पुरस्कारों वर्ष 1990 में राज्य कला अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2000 में नाट्यश्री, थिएटर मूवमेंट, कटक द्वारा नाट्यश्री पुरस्कार, वर्ष 2009 में डॉ. अंबेडकर फेलोशिप पुरस्कार, वर्ष 2009 में मणिपुर के महाराज के रोयल कोर्ट द्वारा तामयत्र पुरस्कार, मणिपुर साहित्य परिषद द्वारा नाटयभूषण सम्मान, वर्ष 2011 और 2016 में थिएटर केन्द्र, नाट्य रत्न पुरस्कार, 2013, भारत-नेपाल मैत्री अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, 2015 नीलमणि निंगभिग मान, 2015 लाइफ टाइम अचिवमेंट पुरस्कार, 2014 मिंगलेन खेंगा – 2015 पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। मणिपुर की इन सभी सुंदर परंपरागत संस्कृतियों को परिवर्तनशील परिदृश्य में इसकी मौलिक छटा को अच्मुण अक्षुण्ण रखते हुए इसके संवर्धन एवं संरक्षण के लिए आपने विशेष योगदान दिया है एवं इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति को सुंदर स्वरूप प्रदान करना आपके जीवन का एक मात्र उद्देश्य है।